सत्य की परख

२१२ ३६५८

क्रान्ति आने दो

वह दिन इतिहास के पृष्ठों में स्वर्णिम अक्षरों में लिखने योग्य है जिस दिन (१० अप्रैल १८७५) को अद्वितीय विद्वान् निरुपम वक्ता शास्त्रार्थ महारथी, आदित्य ब्रह्मचारी, परमहंस परिव्राजकाचार्य महर्षि दयानंद ने भारतभूमि में आर्य समाज की स्थापना की।

स्थापना क्यों

प्रश्न उपस्थित होता है कि आर्य समाज की स्थापना क्यों की गयी? उत्तर है कि पाखंण्डों के गढ़ों को तोड़ने के लिये कुरीतियों के कुपन्थों के कुकृत्यों को समाप्त करने के लिये विश्व के उपकार के लिये मत,मतान्तरों के अन्धकार को वेद—भानु के प्रकाश से प्रकाशित करने के लिये आर्य समाज की स्थापना हुयी थी। उससे पूर्व महर्षि दयानन्द ने हरिद्वार में पाखण्ड खण्डनी पताका व्योम में लहराई थी। उसी समय से पूज्य महर्षि ने अपने जीवन काल में हजारों शास्त्रार्थ किए और सभी में विजयी हुऐ।

महर्षि के उपरान्त शास्त्रार्थ महारथी पं. गणपति शर्मा, अमर-शहीद पं. लेखराम आर्य पथिक प्रतिवाद भयंकर स्वा० दर्शनानन्द जी आदि-आदि शास्त्रार्थ केसरी आर्यसमाज में उत्पन्न हुये। यही परम्परा आगे भी चलती रही।

प्रकाशक : आर्य प्रतिनिधि सभा, जिला अलीगढ़

Scanned with CamScanner

क्या फल हुआ ?

आर्य समाज के विद्वानों ने लाखों शास्त्रार्थ किये और सभी में विजय श्री मिली। पराजित होकर ईसा-मूसा और मुहम्मद के चेले इस देश से भाग छूटे, वे आर्य समाज के सम्मुख आने में घबराने लगे। अब वे आर्यों के धर्म परिवर्तन करने में असमर्थ हो गये।

पौराणिक, बौद्ध, जैनी, दादूपंथी, कबीर पंथी, वाममार्गी आदि सभी ने अपने-अपने मतों में परिवर्तन किया और वेद के सम्मुख सर झुका दिया।

स्वर्णिम युग

आर्यसमाज का यह युग स्वर्णिम युग था। सचमुच ही वह विचित्र एवं पवित्र अवसर था। समस्त वितन्डावाद समाप्त हुये। आर्यसमाज की विजय दुन्दुभि सर्वत्र फैल गई, देश में आर्य, आर्यत्व, आर्य भाषा और आर्यावर्त्त का जयघोष गूंजने लगा।

दुर्भाग्य आया

अहो! संसार भी कितना परिवर्तन शील है! इसका कोई विश्वास नहीं। आर्य समाज का वह शास्त्रार्थ युग हमारी आँखों में सदा दृष्टि गोचर होता रहता है। किसी भी आर्यसमाज का वार्षिकोत्सव शास्त्रार्थ के बिना नहीं होता था। वैसे भी शास्त्रार्थ होते ही रहते थे। वक्ताओं की स्निग्ध गंभीर ध्वनि श्रोताओं के कानों में गूंजती रहती थी उसका दिव्य दृश्य श्रोताओं के हृदय पटल पर सर्वदा अंकित रहता था। परन्तु अब वह स्वप्न सा हो गया:—

"ख्वाब था, जो कि देखा, जो सुना अफसाना था"।

दुर्भाग्य! अब शास्त्रार्थों और खंडन मंडन को अच्छा नहीं समझा जाता। इसका परिणाम यह निकला है कि पदाधिकारियों

Scanned with CamScanner

सदस्यों, सभासदों, उपदेशकों में से स्वाध्याय की प्रवृत्ति दिनों दिन समाप्त होती जा रही है। साहित्य नष्ट होता जा रहा है, पुराने विद्वान् धीरे २ पञ्चत्व को प्राप्त हो रहे हैं नये आ नहीं रहे। इसका परिणाम यह हो रहा है कि सर्वत्र धर्म के नाम पर आडम्बर बढ़ रहे हैं, ईसा, मूसा, मुहम्मद के अनुयायियों की संख्या बढ़ती जा रही है, देश का बटवारा होता जा रहा है। अनेक नये मत बढ़े इसलिये वैदिक युग लाने को:—

क्रान्ति आने दो

आर्य समाज का प्रत्येक सदस्य स्वाध्याय यज्ञ में लीन रहे, मनन करे वार्षिकोत्सवों में राजनीति के नेताओं, चुनाव विजेताओं के बजाय वैदिक विद्वानों को बुलाकर गम्भीर, सैद्धान्तिक भाषण होने दीजिये! प्रत्येक सदस्य मिशनरी प्रचारक बन जावें। प्रचार को ही अन्तिम ध्येय माना जावे तदनुसार आचरण करें बच्चे-बच्चे में एकेश्वरवाद की धारा बहे, इस क्रान्ति को आने दो।

प्रस्तुत अंक

प्रस्तुत अंक भी इसी उद्देश्य की पूर्ति के हेतु ही प्रकाशित किया जा रहा है। पं. शिव शर्मा, इन्द्र वर्मा, कालीचरण आलिम फाजिल आदि आर्यसमाज के लब्धख्याति शास्त्रार्थ महारथी थे। पं. शिव-शर्मा ने अपने जीवन काल में अनेक शास्त्रार्थ किये। अन्तिम शास्त्रार्थ अलीगढ़ जिले के सेहोर ग्राम में ९मई १९३३ को पादरी अब्दुल हक आदि के साथ हुआ था। यह अपूर्व शास्त्रार्थ जिन श्रोताओं ने स्वयं सुना वे आजतक याद करते हैं, जिन्होंने इसे नहीं सुना वे पछता रहे हैं। एक ओर अपने विषय के प्रकाण्ड विद्वान् पादरी साहब थे तो

Scanned with CamScanner

दूसरी ओर निरूपम वक्ता अद्वितीय शास्त्रार्थ कर्ता पूज्य पण्डितजी
के संवाद सागर देखने और सुनने का वह सुन्दर समय था।
होने को अब भी उत्सव होते, हैं और होंगे व्याख्यान भी होंगे,
सभायें होंगी, श्रोताओं की भीड़ भी जुटेगी, कहने वाले कहेंगे और
कहते हैं किन्तु श्रोता एक कान से सुनकर दूसरी ओर से निकाल
देते हैं. दूसरे शब्दों में पल्लाझाड़ कथायें होती हैं। आर्यसमाज के
पुरातन युग को लौटाना आवश्यक है, देश का सम्मान वेदों का मान
धर्म की शान की रक्षा के लिए आर्य स्वाध्याय प्रेरणा पायें, इसलिये
अब तक अप्रकाशित यह शास्त्रार्थ प्रकाशित किया रहा है। पं. श्री
इन्द्र दत्त जी शर्मा के सद् प्रयत्नों से ही यह सम्भव हो सका है
अतः हम उनके आभारी हैं। यदि पाठकों ने इससे लाभ उठाया तो
हमारा प्रयास सफल होगा।

आचार्य मित्रसेन एम० ए०' सिद्धान्तालंकार

धार्मिक परीक्षायें

भारतवर्षीय वैदिक सिद्धान्त परिषद् (रजि०) की सिद्धान्त प्रवेश, सि० विशारद, सि० भूषण, सिद्धांतालंकार, सि० शास्त्री तथा सिद्धांताचार्य परीक्षायें हिन्दी माध्यमसे आगामी दिसम्बर व मई में समस्त भारत तथा विदेशों में होगी। सर्व प्रथम, द्वितीय, तृतीय, आने वालों को छात्रवृत्ति दी जाती है। उत्तीर्ण होने पर सुन्दर व विरंगा प्रमाण पत्र दिया जाता है तथा अमर ग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश की 'सत्यार्थ सुधाकर, सत्यार्थ मार्त्तण्ड' उपाधियाँ डाक द्वारा निःशुल्क प्राप्त करें। विशेष जानकारी के लिये १५ पैसे की टिकट भेज कर नियमावली मंगाइए

आदित्य ब्रह्मचारी] [आचार्य मित्रसेन एम० ए०]
यशःपाल शास्त्री प्रधान] [सिद्धांतालंकार परीक्षामंत्री]
भारतवर्षीय वैदिकसिद्धांतपरिषद् सेवा-सदन कटराअलीगढ़ उ.प्र.

* ओ३म् *

शास्त्रार्थ का सूत्रपात

अलीगढ़ से पूर्व की ओर एटा की सड़क पर पनेठी के निकट अलहदादपुर गांव में मन्त्री आर्यसमाज बोरना का निवास स्थान है उस गाँव में एक ईसाई मास्टर अलीगढ़ मिशन की ओर से रहता है जिसको वहां के मुखिया ने मकान देकर सहानुभूति प्रकट की। वहाँ के निकटवर्ती गाँवों में ईसाई मास्टर ने प्रचार किया और प्रचार हेतु पादरी केदारनाथ मिशन अलीगढ़ ने बाग में डेरा डाल दिया। मसीही प्रचार और क्षत्रियों के अत्याचार से लगभग २०-२५ गाँवों के चमार ईसाई होने को उद्यत हो गये। इसका पता आर्य-समाज बोरना के मन्त्री को चला तब उन्होंने १२ मार्च ३३ को महाशय आत्माराम जी, पं० चित्रशर्मा जी द्वारा प्रचार कराया और अपने अछूत भाइयों को गले लगाकर शान्ति दी और बहुतसे चमारों ने ईसाई होने से इन्कार कर दिया। प्रचार के समय पादरी केदार-नाथ जी अपने मिशन के साथ मौजूद थे उन्होंने अपने कैम्प में जाकर विशेष कोशिश की और गाँव हकीमगढ़ी में जाकर डेरा जमाया वहाँ के चमार सब ईसाई होने को उद्यत होगये इसका पता जलाली में आर्यसमाज के उत्सव पर २४ मार्च ३३ को किसी व्यक्ति द्वारा मन्त्री को मिला वहां से तत्काल ही पं० इन्द्र वर्मा तथा महाशय आत्माराम जी और महाशय रेवतीराम जी उपदेशक और महाशय

सरदारसिंह जी मन्त्री आर्यसमाज मई, आर्यसमाज चौहान गाँव के मन्त्री पोदरसिंह आदि, म० सरदारसिंह जी मन्त्री आर्य समाज सिकन्दरपुर, पं० रामस्वरूप जी सेहुर, ठाकुर हीरालाल जी व ठा० भूपसिंह जी पं० टोड़ीराम जी अलहदादपुर मन्त्री के साथ गाँव हकीमगढ़ी दुर्गादास चमार की चौपाल पर आये वहाँ पर पादरी केदारनाथ मिशन के साथ सब सामान कैंची बपतिस्मा के बैठे पाये और लगभग २०० के चमार भाई भी बैठे मिले। वहाँ पर आते ही पादरी साहब केदारनाथ में और पं० इन्द्र वर्मा जी में बातचीत आरम्भ हो गई। पं० इन्द्र वर्मा जी का एक व्याख्यान सच्ची शान्ति किस प्रकार मिलती है हुआ और म० आत्माराम जी, पं० रेवतीराम जी के भजन हुये और कुछ जनों ने चमार भाइयों के हाथ का जल ग्रहण किया। इस पर वार्तालाप में ही पादरी केदारनाथ और पं० इन्द्र वर्मा में शास्त्रार्थ की छिड़ गई और उसी समय दोनो पक्षों की ओर से पांच पांच सौ रुपये के इकरार नामा (प्रतिज्ञा पत्र) लिखे गये कि जो पक्ष समय पर न आवे वह पक्ष दूसरे पक्ष को ५००) हर्जा के देवे ईसाइयों ने शास्त्रार्थ का स्थान सेहोर पसंद किया आर्यजनों ने भी उसको स्वीकार कर लिया और ६ मई सन् ३३ शास्त्रार्थ के लिये निश्चय हो गई। इस शास्त्रार्थ की चर्चा समाचार पत्रों द्वारा दूर दूर तक फैलगई और नियत तारीख पर दूर दूर से जनता प्रातःकाल से ही आना शुरु हो गई। दिन ६-२० बजे तक लगभग ४५-५० हजार के जनता एकत्रित हो गई थी। शास्त्रार्थ के प्रबन्ध के लिए ४ दिन पहिले ही श्री मान् साहब कलक्टर बहादुर अलीगढ़ ने दफे १४४ लगाकर पांच पांच मील तक निशस्त्र आने की घोषणा कर दी और नियत स्थान पर २ थानेदार और २-३ गार्ड पुलिस मय हथकड़ियों और

Scanned with CamScanner

शास्त्रों के नियत कर दिये जो ६ मई३३ को प्रातः काल ही आ गये और आत्माराम जी तथा इन्द्रदत्त शास्त्री के प्रचार का सब सामान ले आये। उपस्थिति ३००० हजार थी जिनका प्रबन्ध सरदार सिंह सिकन्दर पुर कर रहे थे, ताँगा—बग्गी— इक्का बेशुमार एकत्रित हो गये और आर्यसमाज की ओर से श्रीमान् पं० शिव शर्मा जी महोपदेशक आ० प्र० नि. सभा उत्तर प्रदेश व श्री मान प. देवेन्द्र जी शास्त्रीसांख्यतीर्थ व श्री मान मौलवी कालीचरण जी आलिमफाजिल श्री मान पं० इन्द्रवर्मा, जी श्री मान पं० देवदत्त जी टेम्प्रेंस्पीचर एक दिन पहले ही आ गये थे सब यज्ञ तथा नगर कीर्तन के पश्चात् ६ बजे पंडाल में आ गये शास्त्रार्थ का समय मसीहों की ओर से १२ बजे मध्यान्ह दिया था और उनके नोटिस में पं हबीब उर्रहमान खां शास्त्री तथा मौ.इमाम बक्स निर्णय कर्ता नियुक्त थे, यह बिना आर्यसमाज की स्वीकारी के छपाया था इस अडचन को प्रांतीय मंडला धीश श्री मान बा० प्रीतम लाल जी ऐडवोकेट तथा श्री मान बाबू विश्म्भरसहाय जी वकील मंत्री आर्यीय प्रतिनिधि सभा अलीगढ़ ने लेख द्वारा पादरी केदार नाथ तथा पादरी जैकमसे निर्णय किया और पं. हबीब उर्रहमान खां तथा मौलवी इमामबक्स प्रबंधक और समय दाता ठहरे और उनके सहायतार्थ आर्यसमाज की ओर से सेठ ज्वाला प्रसाद जिज्ञासु नियत किये गये। जिस पर जिज्ञासु जी ठीक १० बजे पंडाल में आ गये और कुछ मसीही साहब भी ११॥ बजे तक पंडाल में आ विराजे। परन्तु १२ बजे तक पादरी केदार नाथ जी जोकि शास्त्रार्थ के आकांक्षी थे मय प्रबंधक तथा समय दाताओं के नहीं आये, जनता शास्त्रार्थ की इच्छुक थी क्योंकि एक दिन पहिले बड़ी वर्षा हो चुकी थी भीड़ बड़ी थी धूप कड़ी थी, पंडाल छोटा था। छाया की कमी थी जनता घबड़ा रही थी, जब १२ बज कर २० मिनट हुये और पादरी केदारनाथ नहीं आये, तब पं० इन्द्र वर्मा जी ने मसीही प्लेट फार्म की ओर संकेत करके कहा कि पादरी केदारनाथ जी

नहीं आये क्या किया जाय ?

पा० डबल्यू तिवाड़ी-अभी कुछ प्रतीक्षा करें, चल दिये हैं आ रहे होंगे। (प्रतीक्षा की गई।) जब न आये तब वर्मा जी बोलेः—

पं० इन्द्र वर्मा जी-अब बारह बजकर २५ मिनट हैं प्रतिज्ञापत्र यानी इकरार नामा जो पादरी केदारनाथ के हाथ का था सुनाया, इसमें लिखा है जो नियत समय पर न आवे वह ५००) रु० देवे ऐसी हालत में मैं सौ रुपये लेने का अधिकारी हूं या नहीं ?

जनता-हैं

पं० इन्द्र वर्मा जी-पादरी साहबान आप भी बतावें कि ५००) रु० पाने का अधिकारी हूँ या नहीं ?

पा० डबल्यू तिवाड़ी-अभी नहीं।

पं० इन्द्र वर्मा जी-इंजील हाथ में है उसे लेकर कहो।

पा० डबल्यू तिवाड़ी-केदारनाथ के साथ इकरार नामा है न कि हम लोगों ने।

पं० इन्द्र वर्मा जी-द्वारा इकरार नामा पढ़ा गया।

पा० डबल्यू तिवाड़ी-इसमें वक्त नहीं है।

पं० इन्द्र वर्मा-इश्तहार शास्त्रार्थ मसीही सुनाया इसमें वक्त आपकी ओर से १२ बजे से ६ बजे तक छपा है।

पा० डबल्यू तिवाड़ी-आपका और केदार नाथ का इकरार नामा हुआ है आप उनकी गैर हाजिरी में फैसला कैसे लेते हैं ?

पं० इन्द्र वर्मा-फैसला नहीं इकरार नामा सुन कर बतलाइये कि मैं अब रुपये का हकदार हूँ या नहीं।

पा० डबल्यू तिवारी-खामोश।

पं० इन्द्र वर्मा-अब करीब एक बज गया है उनके सिर्फ २ घन्टे और हमारे ३ घन्टे बाकी हैं।

पा० डबल्यू तिवाड़ी-वक्त वह आपको आकर दे सकते हैं ? घन्टा खुद और ५ घन्टा आपको दे सकेंगे।

पं० इन्द्र वर्मा-अब समय अधिक हो गया है वह नहीं आये तो क्या किया जाय? मेरी राय में वक्त के इतमीनान के लिये और जनता को काबू करने के लिये एक रौबदार सभापति चुना जाय। इसके लिये मुझे जिज्ञासु जी अच्छे मालूम होते हैं।

जनता ने स्वीकारी दी और जिज्ञासु जी जयकारा और करतल ध्वनि के बीच सभापति हुये।

सेठ जिज्ञासु जी-जैकारा न बोला जाय न ताली बजाई जावें। इतने में पादरी केदारनाथ और डौकप तथा पं० हबीबुर्रहमानखाँ और मौलवी इमाम बकस आ गये

पं० इन्द्र वर्मा-अब बारह बजकर ४८ मिनट हैं और पादरी केदारनाथ जी आ गये हों तो ५००) रु० देदें क्योंकि नियत समय पर नहीं आये। इकरार नामे में यह शर्त है कि जो समय पर न आवे तो वह ५००) रु० देवे वह समय पर नहीं आये।

पा० केदारनाथ-इकरार नामा में वक्त नहीं है। मैं ठीक समय पर ही आ जाता, अगर मोटर में पंचर न होता। फिर भी सब काम प्रेम से होते हैं जिससे झगड़ा न होवे।

पं० इन्द्र वर्मा-आर्यसमाज रुपये का भूखा नहीं धर्म का भूखा है पादरी केदारनाथ कुछ अधीर हैं इससे मैं रुपया मुआफ़ करता हूँ। अब समय २ घन्टे पादरी साहब के और ३ घन्टे मेरे बाकी हैं। अब सवाल जवाब का वक्त बांटलें।

पा० केदारनाथ-तारीख ५ मई सन् ३३ का मुआइदा इस मजमून का नहीं कि वक्त बांटा जाय। यह तय हुआ है कि मिशनरी सवाल करें और आर्य जवाब दें।

(मुआइदा अंग्रेजी में सुनाया गया)

इमामबक्स प्रधान-बात चीत प्रधान के फैसले के माफिक हों, जोश में बात तय नहीं होती। शान्ति में ध्यान से तय होगी। हम जज नहीं। वक्त बताने वाले और आपके इन्तजाम को आये हैं।

सेठ जिज्ञासु जी-प्रश्नोत्तर का समय और इकरार नामे की शर्त हमारे सामने आप दोनों देंगे तभी हम उन बातों का फैसला और इंतजाम कर सकेंगे। आर्य समाजियों से शान्ति की प्रार्थना की गई।

पं० हबीवुर्रहमान कुछ बोले

बा० प्रीतमलाल जी-मैंने इकरार नामे में यह लिखा और लिखवाया है कि पं० हबीवुर्रहमान सदर ही सभा में शान्ति रखें वह व्याख्यान देंगे ऐसा नहीं। पहिले पादरी साहब बोलेंगे फिर आर्य समाज। बाकी बातें इसी प्रकार हैं। ईश्वरीय ज्ञान बाइबिल या वेद है एक दूसरे पक्ष का खंडन और अपने पक्ष का मंडन करेगा।

पादरी जैकप-नहीं, इकरार नामा में ईसाई सवाल करें और आर्य जवाब दें, यह लिखा है।

पं० इन्द्र वर्मा-आप हमला करते रहें हम उत्तर देते रहें। आप बाइबिल को हमले से महफूज रखना चाहते हैं। पीछे के इकरार नामे में कोई गलती हो वह सुधर सकती है जो पहिला इकरार नामा जदू है उसमें जो लिखा है उसके माफक करना पड़ेगा।

पा० जैकप-केदारनाथ और आपके अन्दर जो इकरार नामा है वह पहिला है जड़ है बाकी क्या है?

बा० पीतमलाल जी-यह नोटिस में आप छाप चुके हैं बहस इलहाम पर होगी। उसी पर होगी उसी पर बोलिये, हम उत्तर देंगे, मगर उसमें से मजमून आधा नहीं काट सकते, आप समय न टालें बहस शुरू करें।

पादरी जैकप-इस नोटिस को आप मानते हैं तो पं० हबीबुर्रहमान को सालिस (पंच) मानना पड़ेगा। वही फैसला देंगे और तय करेंगे, (इश्तहार सुनाया गया।)

बा० पीतमलाल जी-पं० हबीबउर्रहमान प्रेसीडेन्ट होंगे सालिस नहीं, क्योंकि पादरी साहब के नोटिस पर ही उत्तर उन बातों का लिखा था जिन बातों से दोनों राजी थे।

Scanned with CamScanner

पादरी जैकप–बाबू पीतमलाल का परचा मुआइदा नहीं है तो पादरी साहब का परचा क्या है ?

पं० इन्द्र वर्मा–आप अपने इश्तहार को सुनिये ।

(इश्तहार सुनाया गया)

पादरी जैकप–इश्तहार मुआइदा नहीं है केवल निमन्त्रण है । वेद और बाइबिल के बीच में तय करना है पादरी प्रश्न करें आर्य उत्तर दें।

पं० इन्द्र वर्मा–वेद ईश्वर का ज्ञान नहीं है तो क्या बाइबिल है? यह कहना लचर है, मान लीजिये आप साबित भी करें तो मुसलमान और बौद्ध क्या करेंगे ?

पादरी जैकप–जब वेद साबित न होगा तब बाइबिल अजखुद सबूत है ।

पं० इन्द्र वर्मा–यह दलील नहीं कि देवदत्त का सोना खराब है तो गंगाराम का सोना बिना रगड़े ही अच्छा है । यहां तो दोनों का सोना कसौटी पर रगड़ा जायगा जिससे खरा खोटा पन मालूम हो जायगा ।

पादरी जैकप–(संकेत करके) प्रैसीडेन्ट इसका फैसला देंगे ।

पं० इन्द्र वर्मा–एक मत में प्रेसीडेन्ट का फैसला होता है अलग-अलग मत का फैसला देना प्रेसीडेन्ट नहीं, जनता देती है ।

पादरी जैकप–सवाल जबाबको अलग २ वक्त नहीं, एक साथ हों।

प्रेसीडेन्ट–अब १ बजकर ५८ मिनट हैं वक्त जा रहा है ।

पादरी जैकप–यदि एक आदमी प्रश्न करे तो दूसरा उत्तर नहीं देगा, यानी जवाब देने वाला बदलेगा नहीं ।

बा० पीतमलाल–आदमियों में बहस नहीं सिद्धांत पर है, इसलिये २ आदमी महदूद करता हूं ।

पादरी जैकप–नहीं बोलने में एक ही बोलेगा दूसरा नहीं ।

बा० प्रीतमलाल–आपने भी अपने नोटिस में दो के नाम दिये हैं।

पादरी जैकप–नहीं बोलने वाला एक ही बोलेगा बदलेगा नहीं ।

Scanned with CamScanner

गड़बड़ हो जायगी।

पं० इन्द्र वर्मा-पहिले बोलने वाले का जुम्मा लेकर दूसरा बोलेगा

पादरी जैकप-एक बोलेगा दूसरा नहीं

(इकरार नामा इश्तहार प्रेसीडेन्ट को दिये गये)

सेठ जिज्ञासु जी-शास्त्रार्थ शुरू होता है जनता को शान्ति से सुनना चाहिये जिससे गड़ बड़ी न हो अब २० मिनट पादरी सवाल करेंगे और २० मिनट आर्य उत्तर देंगे पीछे दस २ मिनट दोनों को सवाल जवाब को दिये जावेंगे।

प्रेसीडेन्ट-बहतर है एक मुनाजिर हो। पादरी अब्दुलहक ईसाइयों के प्रश्न कर्ता होंगे और पं० शिव शर्मा जी आर्यों के उत्तर दाता होंगे।

(दोनों नाम दिये गये)

शास्त्रार्थ का प्रारम्भ

वादी—श्री पादरी अब्दुल हक साहब।

प्रतिवादी—श्री पं० शिव शर्मा जी।

वादिपक्ष—वेद ईश्वरीय ज्ञान नहीं, बाईबिल है।

प्रतिवादिपक्ष—बाइबिल नहीं, वेद ही ईश्वरीय ज्ञान है।

सेठ जिज्ञासु-इस वक्त २ बजकर ६ मिनट हैं शास्त्रार्थ का काम शुरू होता है पादरी साहब २ बजकर २६ मिनट पर खतम करेंगे

पादरी अब्दुल हक ने उर्दू में बोलना शुरू किया १० मिनट पर गड़ बड़ हुई सब लोग उठ खड़े हुये क्यों कि आवाज काफी जोर की नहीं थी फिर ७ मिनट बाद बोले और निम्नलिखित प्रश्न किये।

Scanned with CamScanner

प्रश्न नं० १— आर्य्य साहबान कहते हैं कि वेदों में आये हुये अग्नि, वरुण, इन्द्र, वायु आदि नाम ईश्वर के हैं वेदों में साबित कीजियेगा और बताइयेगा कि यह नाम मुश्तरक हैं या नहीं।

नं० २—वेद संस्कृत भाषा ही में क्यों नाजिल हुये इससे ईश्वर पक्षपाती ठहरता है।

नं० ३—वेद के मुलहैमान ने जन्म लिया था ? यदि हां तो वह कर्मों से गुवर्रा कैसे हुये ?

नं-४— वेद सारे उलूम का मखजन है, और ईसाई आदि अन्य धर्म वालों को दावत देता है, वेदों से साबित कीजिये।

नं-५— वेदों की तालीम बतदरीज नहीं है और उसमें इब्तदाई तालीम नहीं है इसलिये वह ईश्वरीय ज्ञान नहीं है।

पं० शिव शर्मा जी

उत्तर नं० १—अग्नि—वरुण—और इन्द्र वगैरह नाम प्रकरणानुसार (मौके महल के मुताबिक) परमात्मा के भी हैं और दूसरी चीजों के भी हैं जिस तरह "लार्ड" गोड जुहोवा, वगैरह नाम बाइबिल में मौके और महल के मुताबिक ईश्वर के भी आते हैं और दीगर अशिया के भी। जब लार्ड के साथ कर्जन या और कोई इंसान का इशारा होगा तो यह समझा जायगा कि ये नाम इंसान के लिये हैं जब "लार्ड" "गौड" के साथ आये तो ईश्वर के। पादरी साहब यदि आपने सत्यार्थप्रकाश देखा होता तो पहिले ही समुल्लास में — "अग्नि" "इन्द्र" "वरुण" वगैरह नाम परमात्मा के भी हैं इसके हवाले मिल जाते हैं। देखिये

Scanned with CamScanner

इन्द्रं मित्रं वरुणमग्निं माहुरथो दिव्यस्सुपर्णो गरुत्मान। एकं सद्विप्रा बहुधा वदन्त्यग्निं यमं मातरिश्वानमाहुँ। ऋग्वेद म.२ अनुवाक २२ सूक्त १६४ मंत्र ४६

इसतरह—युजर्वेद अध्याय १३ मंत्र १८ पृथवी और भूमि वगैरह नाम परमेश्वर के बताये हैं।

सब्रह्मा स विष्णुः स रुद्रस्स शिवस्सो मन्त्रक्षरस्स परमः। स्वराष्ट्र स इन्द्रस्स कालाग्नस्स चन्द्रमा ॥

केवलो पनिषद्

सबजगत् का बनाने वाला होने से विष्णु, दुष्टों को दंड देने से रुद्र मंगलमय और कल्याण कर्ता होने से शिव, सर्वत्र व्याप्त अविनाशी, स्वराष्ट्र, प्रलय में सबका काल और काल का भी काल है इसलिये कालाग्नि है।

उत्तर नं २—वेदों का प्रकाश संसार के आरम्भ में हुआ उस समय संसार में न कोई भाषा प्रचलित थी और न कोई देश आबाद था, संसार में सबसे पहले जो भाषा थी और जसको मुलहैमान जानते थे, उसी में वेदों का प्रकाश किया। इसके अलावा सामवेद ४३। ८।१६ अथर्व वेद कां० ११म०२ सूक्त४ मंत्र१ और ऋग् वेद मंत्र१० सु०-१ मं०१मुलाहिजा हो, केवल स्वामी जी महाराज ही नहीं किन्तु सायणचार्य और मि० ग्रिफिथ आदि भी ऐसा ही मानते हैं:-यथा

यद्यपीन्द्रा दयात्तम इयन्ते तथापि परमेश्वरस्यैवेन्द्रा-दिरूपेण व स्थानादविरोधा तथा च मित्रं वरुणः इन्द्रं मित्रं वरुणमिग्न माहुरथो दिव्यः स सुपर्णो गरुत्मान्।

वेद वैदिक भाषा में हैं न कि आजकल की संस्कृत में संस्कृत कहते हैं सुधरी हुई संस्कार की हुई। वैदिक भाषा किसी मुल्क की भाषा न होने से ईश्वर में पक्षपात नहीं। इब्तदाई ईश्वरीय भाषा सबके लिये एक सी है।

(३) वेदों के मुलहैमान मनुष्य थे उनके नाम अग्नि वायु, आदित्य, अंगिरा थे, स्वामी जी के अलावा सायणाचार्य भी ऐसा ही मानते हैं। देखिये, "अग्नि वायु आदित्याङ्गः या: जीव विशेषाः" अग्नि वायु आदित्य वगैरह ये हवास इंसान अथवा जीव विशेष थे। वेदों के मुलहैमान (जिन पर वेद प्रगट हुये, मुक्त आत्मा थे। उनका पुण्य सबसे अधिक था इसलिये उनको गर्भ का दुःख सहना नहीं पड़ा।

(४) वेद सब विद्याओं का भंडार है उसमें सर्व प्रकार की कला कौशल का सूत्र रूप में विधान है उसके जरिये से वैदिक समय में सब प्रकार की ईजादें हो चुकी थीं। उसमें हर प्रकार की कला कौशल के लिये मंत्र मौजूद हैं। समय पर पेश किये जा सकते हैं। वैदिक धर्म तमामदुनिया को दावत देता है न कि सिर्फ ईसाइयों को देखिये मंत्र में साफ साफ लिखा है,

"कृण्वन्तो विश्व मार्यम्"

सबको आर्य बनाओ

(४) वेद ज्ञान का भंडार है उसमें (वेदों में) बच्चे से लेकर एक महान योगी और मुमुक्षु:—मोक्ष के तालिब तक के लिये हिदायत है; हस्ब लियाकत उनमें से ले लेनी चाहिये जिस तरह एक हिकमत की किताब में जुकाम से लेकर कोढ़ तक का इलाज मौजूद है, हकीम लोग हस्ब जरूरत उसमें से नुसखे निकाल लें। इसी तरह वेद में सब प्रकार का ज्ञान मौजूद है, बच्चे से लेकर योगी तक लाभ उठा सकते हैं।

Scanned with CamScanner

पादरी साहब ईश्वर का ज्ञान मुकम्मिल है उसमें कोई कमी नहीं जो पूरी की जावे। इसलिये उसमें तदरीज नहीं होती और यही कारण है कि भगवान ने वेद द्वारा मुकम्मिल ज्ञान का प्रकाश किया। मनुष्य का ज्ञान गैर मुकम्मिल होता है, उसमें कमी होती है और मनुष्य के ज्ञान को पूरा करने के लिये तदरीज की जरूरत होती है, इसीलिए तौरेत, बाइबिल आदि ईश्वरीय ज्ञान नहीं है। पादरी साहब यह भी बताइये कि हजरत ईसा मसीह १४ वर्ष की आयु से २५ वर्ष की आयु तक कहां रहे ?

पादरी अब्दुलहक साहब

प्रश्न=(१)पंडित जी ईश्वर के नाम मुश्तरक हैं या नहीं इसका उत्तर नहीं दिया। २-स्वामी जी ने ईश्वर के सौनाम सत्यार्थ प्रकाश में मुसलमानों की देखा देखी लिखे हैं। ३-वेदों में इब्तदाई तालीम नहीं है। ४—चार ऋषि कर्म बन्धन में क्यों नहीं आये ?

(५) आपका ईश्वर फल देने में परतंत्र है।

पंडित शिव शर्मा जी

उत्तर (१)—लार्ड और गौड के उदाहरण से बतला दिया गया कि ये नाम सिफाती हैं, प्रकरणानुसार परमात्मा के और दूसरों के अर्थ होते हैं, लार्ड कर्जन की मिसाल दे दी गयी है।

(२) स्वामी जी ने ईश्वर के सौ नाम लिखते हुये मुसलमानों की नकल नहीं की, इस्लाम के बानी की पैदायश से पहिले ही हिन्दुओं ने विष्णु सहस्र नाम और गोपाल सहस्र नाम लिख रखे हैं वेदों में अनेक नाम ईश्वर के आये हुये हैं। हस्ब जरूरत लिये जाते हैं।

Scanned with CamScanner

(३) आप इब्तदाई तालीम की तारीफ करें; बाइबिल से इब्तदाई तालीम साबित करें, वेद में इब्तदाई तालीम है:-

अग्निमीडे पुरोहितं यज्ञस्यदेवमृत्विजम् ।

होतारं रत्नधातमम् ॥

ऋ,—१—१—१

(४) योनियां तीन तरह की होती हैं, कर्मयोनि, भोग योनि, कर्म भोग योनि, इब्तदाई चार ऋषि कर्म योनि थे कर्मों को भोगने नहीं किन्तु कर्म करने के लिये थी, पशु आदि भोग योनि हैं, मनुष्य कर्म और भोग योनि हैं; जिस प्रकार जेल का बनाने वाला जेल के बंधन में नहीं फंसता, किन्तु और अपराधियों के लिये जेल का बंन्धन तैयार कर देता है, इसी तरह आदि सृष्टि के जीव विशेष कर्म भोगने को नहीं आते ।

(५) ईश्वर कर्मों के फल देने में परतंत्र है, इसका मतलब यह है कि जैसे न्यायाधीश चोर को सजा जरूर देता है अगर न दे तो गैर मुंसिफ ठहरता है इसी प्रकार परमात्मा पापी को कुकर्मों का फल अवश्य ही देता है न दे तो न्याय कारी नहीं ठहरता है, पादरी साहब बाइबिल पर किये हुये एतराज का अपने उत्तर नहीं दिया। नोटो बिच रूसी ऐतिहासिक तत्ववेत्ता लिखता है कि हजरत मसीह १४ वर्ष की आयु से २५ वर्ष की आयु तक भारतवर्ष में रहे और ब्राह्मणों से वेद पढ़े ।

पादरी अब्दुल हक साहब

प्रश्न— लाईखुदा का लकब है, इसको "इजाफी" नाम कहते हैं, स्वामी जी के और लक्ष्मीनारायण के तर्जुमे में बहुत फर्क

है वेदों में देवताओं से सिर्फ दुआएं हैं; अहकाम, आज्ञा, विधि नहीं हैं। वेदों के अर्थों को किसी ने नहीं जाना, यहाँ तक कि ऋषियों तक को भी अर्थ मालूम नहीं थे। वह भी इलहाम क्या जिसके बहुत से माने हो सकें? वेद में एक ईश्वर की पूजा और ईश्वर की सिफात का बयान नहीं है। नोटोविच कोई मुवर्रिख नहीं, हम उसके कौल को नहीं मानते।

पंडित शिव शर्मा जी–इसी तरह परमात्मा का मुख्य नाम "ओ३म्" है, शेष अग्नि, वरुण और इन्द्र वगैरह नाम सिफाती हैं। स्वामीजी का तर्जुमा पुराने ऋषियों के मुआफिक हैं, लक्ष्मीनारायण का तर्जुमा साम्प्रदायिक है। वेदों में देवताओं से दुआ नहीं किन्तु केवल परमात्मा से प्रार्थना है। आपने वेदों का कभी मुताअला नहीं किया वर्ना जान लेते कि वेदों में अहकाम मौजूद हैं। देखिये वेदों में साफ लिखा है कि "वेदाहमेतं पुरुषं महान्तमादित्य वर्णान्तमसः परस्तात। तमेव विदित्वा ति मृत्यु मेति नान्यः पन्था विद्यते ऽयनाय" यानी परमेश्वर को ही जानकर मुक्ति हासिल कर सकता है। "सपर्य्यगाच्छुक्र मकायम ब्रण मस्नाविरँ शुद्धं पाप विद्धम्" लिखा है यानी वह परमात्मा निराकार कादिर मुतलक है। उसने हमेशा रहने वाली प्रजा के लिये सच्चे वेद दिये, "अक्षैर्मा दीव्यः" जूआ मत खेलो "कृण्वन्तो विश्व मार्यम्" ऋग्वेद। सबको आर्य बनाओ आदि के ऋषियों ने परमात्मा द्वारा वेदों के अर्थों को जाना। उसके बाद बराबर वेदार्थ जानते रहे। वेदार्थ करने के नियम निरुक्त आदि ग्रन्थों में लिखे गये। वेदज्ञ व्यास आदि असंख्य ऋषि और मुनि हुये। जब कि एक साधारण कवि की कविता के भिन्न २ आशय विद्वान् निकालते हैं तो ईश्वर जैसे कविता करने वाले के वेद रूप कविता के यदि भिन्न २ सुन्दर और लाभदायक आशय निकाले जायें तो क्या हानि है? हाँ मंशा के विरुद्ध न हो। जो

मतवादी लोग अर्थ का अनर्थ करके अपने सम्प्रदाय की वृद्धि के लिये विरुद्ध अनर्थ करते हैं वे पापी हैं। जब कि परमात्मा की बनाई हुई अन्य वस्तुओं में अनेक गुण हैं तो वेदों में अनेक विद्यायें होने में क्या हानि है ? आपने बाइबिल में इब्तदाई तालीम नहीं बताई ?

पादरी अब्दुलहक साहब–महीधर ने स्वामी जी के खिलाफ वेदों का तर्जुमा किया है। बिना माँ बाप के शुरू दुनियाँ में इन्सान कैसे और क्यों पैदा किये स्वामी जी का भाष्य गलत है मैं फिर बताये देता हूं कि लार्ड और गौड वगैरह नाम इजाफी है। अग्नि वगैरह नाम खास ईश्वर के वेद ने बताये हैं। मोजिजों पर बहस करते तो अच्छा था। मोजिजों की जरूरत क्यों है ? यह हमसे दरयाफ्त करिये। जब आपने इब्तदा में बिना माँ बाप के इन्सान पैदा होना मान लिये तो मौजिजा तसलीम कर लिया।

पंडित शिव शर्मा जी–महीधर बाममार्गी था, हम उसके तर्जुमे को नहीं मानते। जो आपने स्वामी जी का तर्जुमा पढ़ा वह ठीक है शुरू दुनिया में बिना मा बाप के पैदा होने की जरूरत थी। जब दुनिया का सिलसिला जारी हो गया तो बिना मा बाप के पैदाइश की जरूरत नहीं। हजरत मसीह के समय दुनिया का सिलसिला जारी था। आप स्वामी जी के भाष्य की कोई गलती साबित कीजिये जहाँ पर बाइबिल में सिर्फ गौड और जौड अलफाज आये हैं वहाँ पर इजाफी कैसे हुये हैं ? अग्नि, इन्द्र और वरुण वगैरह ईश्वर के सिफाती नाम हैं यह पहिले बताया जा चुका है। मौजिजे हम नहीं मानते यह कानून कुदरत के खिलाफ अमर है इसलिये गलत हैं। क्या यह किताब इलहामी हो सकती है जिसमें लिखा हो कि ईश्वर का आत्मा पानी पर डोलता था ? बाइबिल से इब्तदाई तालीम जनाब ने नहीं बतलाई।

पादरी अब्दुलहक साहब–यह मै जानता हूँ कि महीधर के तर्जुमे

Scanned with CamScanner

से स्वामी जी का तर्जुमा अच्छा है, लेकिन इस में क्या सबूत है कि महीधर का गलत और स्वामी जी का सही है ? वेदों में इब्तदाई तालीम होनी चाहिये। ईसाइत बतदरीज इलहाम बताती है। मौजिजों की तमाम दुनिया कायल है। ईश्वर का आत्मा पानी पर नहीं डोलता था बल्कि वह हरकते इरादी थी जो फेल में तबदील हुई। खुदा की हरकतें इरादी पानी पर असर करती थी, यानी पानी को जुम्बिश देती थी। स्वामी जी ने इन्द्र के अर्थ कहीं बिजली किये हैं, कहीं देवता के किये हैं कहीं ईश्वर और कहीं कुछ ? ऐसे ही बृहस्पति वगैरह के अर्थों में गड़बड़ है।

पंडित शिव शर्मा जी-महीधर का तर्जुमा इसलिये गलत है कि वह प्राचीन ऋषियों के वैदिक मुहावरे व्याकरण और प्रकरण के खिलाफ है। स्वामी जी का भाष्य हर तरह से प्राचीन ऋषियों के मुआफिक, कानूने कुदरत के मुताबिक व्याकरण के मुहावरे व प्रकरण के अनुसार है। आप बार बार इब्तदाई तालीम का जिकर करते हैं, परन्तु अब तक बाइबिल से इब्तदाई तालीम साबित नहीं की ? अब जरा अपनी इब्तदाई तालीम के नमूने फरमायें—"ईश्वर की आत्मा पानी पर डोलती थी" हरकत आत्मा करती थी न कि पानी। जो चीज हरकत करती है वह महदूद होती है और जो महदूद है वह सर्वज्ञ नहीं, वह ईश्वर नहीं, अतः बाइबिल का बनाया हुआ खुदा ईश्वर नहीं हो सकता और न उसकी दी हुई पुस्तक इलहामी हो सकती है। क्या इब्तदाई तालीम यह है जैसा कि 'महजे कोल की पुस्तक पर्व ४ आयत १२ पर खुदा कहता है कि ऐ नबी तू अपना वह भोजन जो रोटियों की नाई बनाकर खाया करना और उसको मनुष्य की विष्ठा (पाखाने) से बनाया करना या जैसे हजरत मसीह ने अपने चेलों से पराये गधे बिना मालिक की आज्ञा के मंगवा लिये।" पादरी साहब क्या यह चोरी नहीं है ?

पादरी अब्दुलहक साहब–खुदा का कौल बतौर पेशीन गोई के है। दुश्मनों की सजा देने का यह तरीका है अगर दुश्मन इस फैल की नकल करेंगे तो उनको नुक्सान पहुँचेगा। आगे चलकर खुदा खुद कहता है कि गाय के गोबर से रोटी पका, वहाँ पर ईश्वर की आत्मा लिखा है ईश्वर की आत्मा का असर सबसे पेश्तर पानी पर हुआ। यानी सबसे पहिले पानी को बनाया। गधा मंगवाना चोरी नहीं है। जरूरत थी सवारी के लिये खुलवा मंगाया। क्या हर्ज है?

पंडित शिव शर्मा जी–वहां पर पेशीन गोई का जिकर नहीं। अगर होगी तो दुश्मनों को सजा देने का कितना भद्दा तरीका है कि पहिले खुद नबी भ्रष्ट होले फिर दूसरे को भ्रष्ट करे। क्या दूसरे को जिनाकारी सिखाने के लियेपहिले खुदा जिना करे? गाय के गोबर से पकाने का हुंक्म उस वक्तदिया था जबकि नबी ने खुद इन्सान के पाखाने को बुरा समझकर एतराज किया। अगर नबी एतराज न करके खुदा की बात को मान लेता तो क्या आज ईसाइयों के घर इसका अनुकरण(नकल)किया जाता? बाइबिल में परस्पर विरोध भी है। एक जगह लिखा है किखुदा पछताता है, दूसरी जगह लिखा है कि खुदा कभी नहीं पछताता। उत्पति पर्व ६ आयत ७। क्या मालिक के पीछे उसकी बिना इजाजत के कोई चीज ले लेना चोरी नहीं हैं?

पादरी अब्दुलहक साहब–खुदा का पछताना इन्सान का पछताना नहीं है। पछताने से मतलब दिली अफसोस करना है जिस को तअस्सुफ कहते हैं। अच्छा जरा यह तो बतताइये कि खुदा पछताता है" यह कलमा मूजिबा है या सालिबा? क्या ईश्वर में वेदों के बाद इलहाम भेजने की ताकत नहीं रही? पंडितजी आप बाइबिल पर एतराजात व्यर्थ ला रहे हैं।

पं० शिव शर्मा जी–पादरी साहब क्या इब्तदाई तालीम यह है कि बेटियां बाप से औलाद पैदा करें जैसा हजरत लूत की लड़कियों

ने किया। हजरत या खुदा याकूब से कुश्ती लड़े या खुदा गुमार को देखने को आसमान से उतरे। या खुदा हजरत इब्राहीम से बातें करके आसमान पर चढ़ जाये। या बछड़े का जला हुआ खून सूंघकर खुश होता रहे। क्या गूलर से बेमौसम फल मांगना और न देने पर उसको बद्दुआ शाप देना नादानी नहीं है? इसका जवाब दीजिये। रही वेदों के इलहाम के पश्चात् किसी और को इलहाम की बात, इसका उत्तर पहिले दिया जा चुका है। परमात्मा का ज्ञान मुकम्मिल है और उसमें मुकम्मिल इलहाम वेदों द्वारा संसार के आरम्भ में दे दिया उसको तदरीज की जरूरत नहीं थी और न वह तदरीज के फन्दे में अपने बन्दों को डालना चाहता था। तदरीज इंसानी काम में कमी महदूद व गैर मुकम्मिल ज्ञान के कारण रहती है। यही दलील है कि बाइबिल ईश्वरी कलाम नहीं है।

पादरी अब्दुलहक साहब-पंडित जी आप बार २ पुराने अहद नामे पर एतराज करते हैं जो हमको मान्य नहीं हैं परन्तु अपने गरेबान में जरा देखिये कि आपके यहां नियोग जैसे गंदे मसले को मानता है। आर्यों को तो इसी मसले पर डूब कर मरजाना चाहिये परन्तु आपको शर्म तक नहीं आती।

नोटः—पबलिक से आवाजें आई पादरी शब्द वापिस लीजिये। पादरी साहब ने लज्जित होकर नीचा मुँह करके कहा पन्डित जी आप बाइबिल की इलाहमियात को न जानते हैं और न समझते हैं।

पंडित शिव शर्मा जी-पादरी साहब ने तो हमको गालियाँ ही दी हैं। बाजे २ तो कपड़े फाड़ने लगते हैं, ईंट फैंकने लगते हैं (जनता में हंसी) पादरी साहब नियोग मुसीबत का धर्म है। आपके यहां पर भी भौजाई से नियोग करना लिखा है। नियोग न करने से बुरे नतीजे बाइबिल में मौजूद हैं। सुनिये, रूबिन ने अपने बाप की सुरैतिन वाल्दा (माता) से संभोग किया। पादरी साहब! ईश्वर ने

सूरज और चांद की मानिन्द इब्तदा में मुकम्मिल इलहाम दे दिया क्या सूरज और चांद को भी बदलेगा ? आखिर आप भी मानते हैं कि इंजील खुदा का आखिरी कलाम है तो आगे की इन्जील की खुदा में कलाम करने की या इलहाम भेजने की ताकत नहीं रही ?

पादरी अब्दुलहक साहब–यहूदियों की शरह में बाप की सुरैतिन रखैल से भोग कर लेना जाइज था। लूत की बेटियां नबियाँ नहीं थीं। खुदा ने लूत की बेटियों के बेटों को खुदा परस्ती से अलहदा कर दिया। पंडित जी खाविंद के मरजाने पर औलाद के लिये हमारे यहाँ नियोग है आपके यहाँ मजे के लिये है।

पं० शिव शर्मा जी–हजरत मसीह फरमाते हैं कि मैं पुरानी शरह को पूरा कराने को आया हूँ न कि उसको मिटाने को। इसलिये यहूदियों की शरह आपकी शरह हुई। वहां पर तो बाका है निकाह या नियोग भी नहीं हैं। अपनी शैतानी ख्वाहिश पूरा करना लिखा है। क्या यही शरह और इब्तदाई तालीम है ? क्या यहूदियों और आपकी शरह में यह भी जायज है कि भाई बहन से कहे कि बहिन तेरे घर में रोटी खाऊंगा, जब बहिन रोटी तैयार करले तब उसको कोठे में फुलके देने को बुलाये और ज्योंही बहिन अन्दर लेजाकर फुलके दे तो भाई बहिन को पकड़ले और......? देखो शम अल पर्व १३ आयत १ से। खुदा का घर न होना तम्बू का रहना। राजा की १ पुस्तक ८। १८ से क्या पादरी साहब ऐसी पुस्तक इलहामी हो सकती हैं ? पादरी साहब और शरह की बातों से आजकल की दफे ३७७ ता० हिन्द बनती है।

पादरी अब्दुलहक साहब–ऊपर चढ़ना उतरना फरिश्तों के लिये है खुदा के लिये नहीं। आखिर में पादरी साहब ने फारसी जबान में महीधर का तर्जुमा पढ़ा।

पंडित शिव शर्मा जी–वहाँ पर साफ लिखा है कि ईश्वर मुफर

Scanned with CamScanner

देखने को आसमान से उतरा इब्राहीम से बातें कर चुकने पर आसमान पर ईश्वर चढ़ गया। फरिश्तों का न नाम है न जिकर। बेटियां नबियां नहीं थी तो हजरतलूत तो नबी थे ? गुनाह था हजरत लूत का और उनकी बेटियों को सजा मिलती है। लड़कियों के बेटों को, अजीब न्याय है ? बाइबिल में साफ विरोध है। पछताना अपनी गलती को महसूस करलेना है। महीधर के तर्जुमा को हम नहीं मानते तो उसका पेश करना फिजूल है। नियोग मजे केलिए नहीं है, औलाद के लिए है। देखो—पत्युर्जनित्वमभि संबभूथ। ऋग्वेद। यानी यह औलाद तेरे पति की होगी। बाइबिल और पाखाने की बात (लोगों में हँसी) धन्यवाद के पश्चात् शास्त्रार्थ समाप्त हुआ।

शास्त्रार्थ का प्रभाव

इस प्रांत में मसीही प्रचार का इतना प्रचार था कि बहुत से चमार ईसाई होने वाले थे और बहुतसे हो चुके थे, शास्त्रार्थ के उपरान्त जो ग्रामीण चमार ईसाई होने वाले थे सब बच गये और ईसाई नहीं हुये। उन्होंने पंचायत करके हिन्दुधर्म को न छोड़ने का निश्चय किया। जो चमार, भंगी ईसाई हो गये थे उन सभी लोगों ने पुनः शुद्ध होकर चोटी रखाई और अपने धर्म में आये। इस कारण आर्यसमाज की पूर्ण विजय हुई और ईसाई पादरियों को शर्मिन्दा होकर उठना पड़ा। क्योंकि यह पहिला ही अवसर था जब जनता के सामने बाइबिल की भीतरी पोल खुली। ईसाई पादरी लोग सदैव आर्यसमाज के सामने खुदा, रूह और माद्दे की क़दामत पर ही बहस करके अपना पीछा छुड़ाते रहे हैं।

Scanned with CamScanner

गीत

प्रेम कहाँ है ? वन कानन में
अथवा नर–नारी–आनन में ?
या वसुधा, विस्तीर्ण गगन में
या हीरा–मणि मुक्ता कन में ?
भौतिकता के कल कान्तारों का
खिलता वह सुमन नहीं है ।
जगती के क्षणगामी धन द्रव्यों
में रहता, प्रेम नहीं है ।
हरित पुनीत प्रेम वल्लरी,
कलित दीखती वेद निलय में,
वह शाश्वत अनवरत एक सा
मुस्काता है विमल हृदय में ।
प्रेम ढूंढ़ना है मत ढूंढ़ो
वस्तु पुञ्ज में, नर चेहरों में,
निकट मिलेगा निश्छल सुन्दर
अन्तर गुण के उपहारों में ।

—श्री सोहन साहु

बी०एस०सी०, बी०ए०, असरगंज

Scanned with CamScanner

अब हम क्या करें

आदित्य ब्रह्मचारी यशःपाल शास्त्री जी महाराज के मुखारविन्द से

सत्य सनातन शान्ति के नियम यदि कहीं हैं तो केवल वेद में। वेद ही ईश्वरीय ज्ञान है, उसके अतिरिक्त और कोई ग्रन्थ ईश्वरीय नहीं हो सकता यह विचार कसौटी पर कसने के उपरान्त महान् विद्वान् विचारकों और मनीषियों का है। जैसा कि आपने इस शास्त्रार्थ से भी जान चुके हैं। इसीलिये देव दयानन्द ने सिंह गर्जना की थी। "वेद सब सत्य विद्याओं का पुस्तक है, वेद का पढ़ना, पढ़ाना और सुनना; सुनाना सब आर्यों का परम धर्म है।"

जब तक आर्यों ने इस पर आचरण किया, संसार के सिरमौर रहे, और जब से शिथिलता आई उस समय से पिछड़ गये। कल-परसों के मत-मतान्तर, जिनके पास न कोई सत्य, धर्म ग्रन्थ है, न विशेष विद्वान् हैं, न त्यागी और तपस्वी हैं, आगे बढ़ गये क्यों? क्योंकि आर्यों ने वेद का प्रचार तदनुसार व्यवहार में शिथिलता की। अतः सबके सिरमौर बनने, वेद भगवान् का दिव्य सन्देश सर्वत्र प्रसारित करने हेतु निम्न व्रत लिया जाय।

१- दैनिक सपरिवार यज्ञ करेंगे, यज्ञ किए बिना भोजन भी नहीं करेंगे।

२- स्वाध्याय जीवन का अंग रहेगा, प्रतिदिन कम से कम आधा घन्टा वैदिक स्वाध्याय करेंगे।

३- प्रतिदिन १० पै० अर्थात् ३) मासिक का सत्साहित्य निःशुल्क वितरित करेंगे।

४- प्रति रविवार को आर्य समाज के साप्ताहिक सत्संग में अवश्य जायेंगे।

५- अपने अड़ौस पड़ौसमें वैदिक वातावरण बनानेका यत्न करेंगे।

ईश्वर आपको सामर्थ्य दे जिससे वेद भगवान् के प्रचार में अपना जीवन सफल कर सकें।

Scanned with CamScanner

आरती

ओ३म् जय जगदीश हरे, पिता जय जगदीश हरे ।
भक्त-जनन के सङ्कट क्षण में दूर करे ॥१॥
जो ध्यावे फल पावे दुःख विनसे मन का ।
सुख-सम्पत्ति घर आवे, कष्ट मिटे तन का ॥२॥
मात-पिता तुम मेरे, शरण गहूँ किसकी ।
तुम बिन और न दूजा, आस करूं जिसकी ॥३॥
तुम पूरण परमात्मा, तुम अन्तर्यामी ।
पार ब्रह्म परमेश्वर, तुम सब के स्वामी ॥४॥
तुम करुणा के सागर, तुम पालन कर्त्ता ।
मैं सेवक तुम स्वामी, कृपा करो भर्त्ता ॥५॥
तुम हो एक अगोचर, सबके प्राणपती ।
किस विधि मिलूं दयामय, तुम को मैं कुमती ॥६॥
दीन-बन्धु दुःख हर्त्ता, तुम रक्षक मेरे ।
करुणा हस्त बढ़ाओ शरण पड़ा तेरे ॥७॥
विषय विकार मिटाओ, पाप हरो देवा ।
श्रद्धा—भक्ति बढ़ाओ, सन्तन की सेवा ॥८॥

Scanned with CamScanner

सेहोर के शास्त्रार्थ को उपस्थित करते हुये हमें अपार हर्ष हो रहा है। इस शास्त्रार्थ को पढ़ने के पश्चात् यह स्पष्ट हो जाता है कि ईसाई शास्त्रार्थ में आर्यों के सम्मुख सदैव पराजित होते रहे हैं क्योंकि सत्यता केवल वेद में है। यह शास्त्रार्थ मेरे जन्म काल से भी पूर्व हुआ था, अतः इसे अपने प्रिय पाठकों के सम्मुख उपस्थित करने का सौभाग्य पूज्य पं० इन्द्रदत्त जी शर्मा तत्कालीन मन्त्री आर्य समाज बोरना (अलीगढ़) के सद्प्रयत्नों से मिला है। इसके लिए मैं राष्ट्रपुरुष परिवार तथा आर्योपप्रतिनिधि सभा अलीगढ़ की ओर से आभारिणी हूं। यदि आप हमें सहयोग देते रहे तो हम साप्ताहिक राष्ट्र पुरुष के माध्यम से वैदिक धर्म व राष्ट्र के शत्रुओं का मुख मर्दन कर सकेंगे।

विजयलक्ष्मी प्र. सम्पादिका

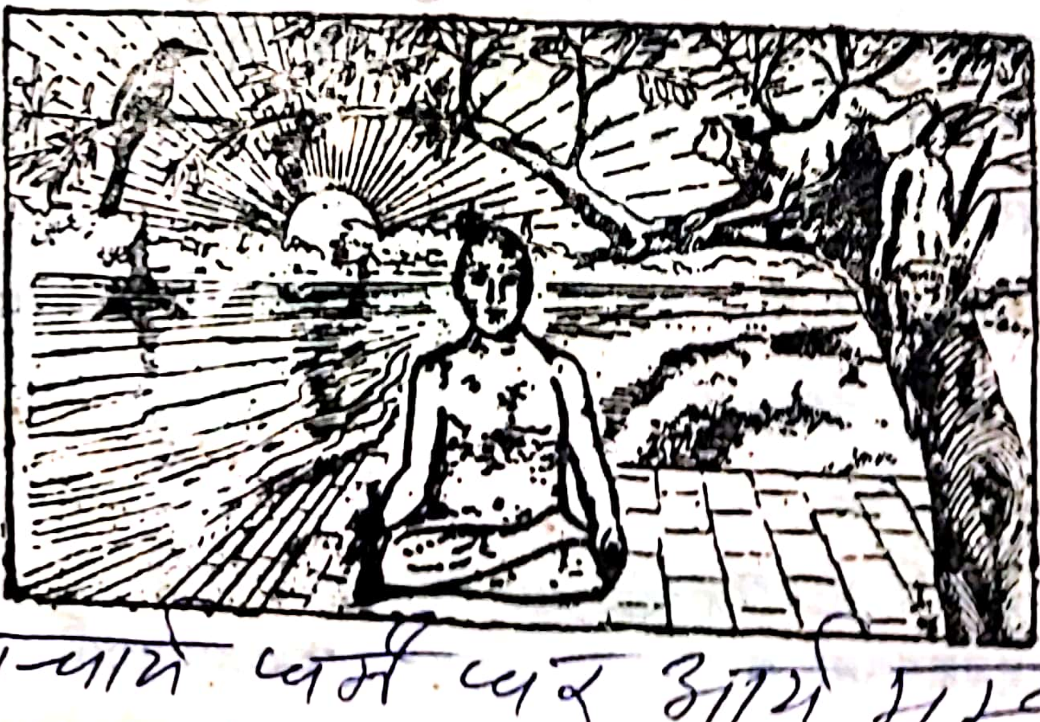

आचार्य धर्मधर आर्य मुरवाडी